16686

॥ श्रीसीतारामाभ्यांनमः ॥

# * श्री जानकी जीवन पदावली *

रचयिता—

श्री अनन्त श्री साकेतवासी परमहंस

**श्री रामदास जी महाराज के शिष्य**

वर्तमान स्थानाधिपति श्री १०८ श्री

**श्री जानकी जीवन शरणजी महाराज**

दरबार श्री लाल साहब कनक भवन,

श्री अयोध्या जी।

प्रथमवार १०००]

[सं० २०१५

## ❀ लावनी ❀

श्री रघुवर राज किशोर प्रणत हितकारी। अब कृपा करौ रघुनाथ भगत भयहारी॥ दुख बहुत सहे नहि कहे यद्यपि जानत तुम प्यारे। तव पद कंजन बिसराय सहे दुख भारे॥ ये दीना नाथ अनाथ सकल अघहारी॥ अब॥ मोहि दीजे यह बरदान जपूँ तव नाम न बिसरूँ कबहीं, निज कर्मनि जाऊँ कहीं न भूलूँ तुमहीं। हे पतित उधारन नाथ दीन हितकारी॥अब॥ गई बाल अवस्था खेल करत बहु युवा भये मदमाते, कीन्हे मन माने कर्म, सकल रंग राते। जब बूढ़ भये बल गये न पूछै कोउ घर बारी॥ अब॥ सकल कुटुम्ब परिवार देत बिसराय सहत दुख भारी, तुम बिन कोऊ नहि नाथ, श्री अवध बिहारी। अब जानकि जीवन शरण गहे तव चरण हिये मे हारी॥ अब कृपा करो॥

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
16686
श्री ... सेवा ट्रस्ट
... दास ... साकेत ...

❀ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ❀ ❀ श्रीमते रामानन्दाय नमः ❀

❀ श्रीमद् गोस्वामी तुलसी दासाय नमः ❀

# 卐 श्री जानकी जीवन पदावली 卐

## श्री गुरु बन्दना

श्रीगुरु चरण कमल रज गहिये। सुमिरन करत बढ़त सिय पद रति, अवि-चल भक्ति सुलहिये। अमिय मूरि गुणखानि जानि जिय, पाप ताप सब दहिये॥ सिय वर कृपा कटाक्ष होतहीं, आनन्द सिन्धु में रहिये। त्रिविध ताप संताप दूरि करि, जानकी जीवन कहिये॥

### पद १

प्रथम करूँ आचारज को ध्यान। जाको ध्यान धरत अघनाशत, पूरन होत सुकाम। सिय पद प्रेम बढ़त सुमिरन ते, करत कृपा श्रीराम। जानकि जीवन शरन प्राप्त हो जो सब सुख की खान॥

बन्दों श्री आचारज पद कञ्ज।
जिनको सुमिरत ध्यान धरतही, होत दूर दुख द्वन्द ॥ सकल विघ्न दूरिजात तुरंतहीं, ऐसे आनन्द कन्द। जानकि जीवन गुरु कृपा ते अपनावत रघुनन्द ॥

बधाई २

हमारी सिया स्वामिनी जू की गावो बधाई।
रानी सुनयना जी को कोख सिरानी, पुर प्रमोद अधिकाई ॥ भरि भरि हेम थार मोतिन के युवती जनन लुटाई। बिधु बदनी मृगनयनी गावत कोकिल कंठ सुहाई ॥ ब्रह्मांणी इन्द्रांनी आदिक दरस करत मन भाई। अमिय भूरि प्रगटी सु जानकी जीवन की सुखदाई ॥

बधाई ३

बधाई सब मिल गाओ आज।
दश स्यन्दन जू के राम प्रगट भये अचल

भयो कुलराज। देत याचकन मुक्तामाणिक विप्रन कहँ गजराज ॥ सुर नर मुनि सबके दुख बीते मुदित सराहत भाग। हर्षित देव सुमन बर्षावत विपुल दुँदभी बाज ॥जानकी जीवन शरन विलोकत उमगि उमगि अनुराग ॥

बधाई ४

बधाई गाइये हिल मिल हैं जन्मे राम रघुरइया । चैत्र शित चारु नौमी आज दिन सबको है सुख दइया ॥ जिन्हे निर्गुन निरंजन निर्विकारी वेद है कहते, वही दसरथ के गृह जन्मे, सुभक्तो प्रेम दरशाइया ॥ विबुध जय जय करें प्रमुदित हो दरसन जानकी जीवन, शरन इनको है सुख की खान, भव बन्धन की छोरइया ॥

बधाई ५

कौशल्या माई सुत जायो अति बाँका।

बदन मयंक ताप त्रय मोचन कोटि काम उपमा का ॥ मृदु मुस्कयान माधुरी मूरति नहि कोउ पटतर जाका। जानकी जीवन शरन दरस करलेहु लाभ नयना का ॥

बधाइ ६

हमारी स्वामिनी श्री सीता।

मातु सुनयना के गृह जन्मी, संग सखी अगणीता ॥ बजत बधाई त्रिभुवन माही सुर मुनि के दुख बीता। महाराज मिथिलेश द्विजन को देत दान मन चीता ॥ रिधि सिद्धि सम्पति निरखि सबनि के भये सुरेश लजीता। जुत्थ जुत्थ मिलि कोकिल बयनी गान करत सुपुनीता ॥ जानकि जीवन निसि दिन गावत सिय स्वामिनि गुँणगीता ॥

बधाई बाजि रही घमसान।

दसस्यन्दन के गृह जगबन्दन, प्रगटे ब्रह्म

सुराम अति सुन्दर सुकुमार मनोहर चारौ सुखके धाम। मात कौशिल्या हरषि हरषि अति देत द्विजन कहँ दान॥ देव सुमन बरसाय मुदित ह्वै करत अप्सरा गान। जानकि जीवन सरन दरस करि पावत सुख सु महान॥

फूल बँगला पद ७

आली फूल बँगला बना क्या बाँका। छिति छत पुष्प कलिन की प्यारी, चलत फुहार अतर केवड़ा का। सुमन कली की अली खड़ी बहु शोभा अमित न उपमा ताका॥ सुमन शृङ्गार किये प्रिय प्रीतम लाजत कोटि काम छबि जाका। जानकी जीवन सुमन बिजन ले करत बयार त्रिबिध सुषमा का॥

फूल बँगला पद ८

सुमन के बँगला मध्य राजैं पिय प्यारी।

ललित सुमन के भूषन अद्भुत क्रीट चन्द्रिका शिरपे धारी॥ सुमन शृङ्गार किये बहु बनिता सुमन बिजन ले छत्र सवाँरी। सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जी सिय स्वामिनी की प्राण पियारी॥ हँसि हँसि पान खवावत दोऊन निरखत रूप चन्द उजियारी। करत बिहार सुमन बँगला में, रति पति कोटि कोटि बलिहारी।

फूल बँगला पद ६

हमारी सिया पिया जू की झाँकी अद्भुत प्यारी॥ कोटि काम छबि रघुनन्दन की, सिय छबि पै बलिहारी। दोउन के श्री क्रीट चन्द्रिका कुण्डल की छबि अनुपम न्यारी॥१॥ इतर गुलाब के चलत फुहारे उड़त सुगन्ध सुभारी। त्रिविध सुगन्ध बहत सुखदाई चहुदिसि पुष्पन क्यारी॥२॥ जानकी जीवन जन सुखदायक भक्तन

के हित कारी । लीजे निरखि नयन भरि जोड़ी कर तन मन बलिहारी ॥ ३ ॥

फूल बँगला पद १०

सुमन के बँगला में राजैं पिया प्यारी। फूलन की भीति सो है छींत छत फूलन की, ताहि मध्य राजत श्री युगल बिहारी हो॥ १ ॥ फूलन को मुकुट सु चन्द्रिकाहु फूलन की । फूलन के भूषन बसन छबि न्यारी हो ॥ २ ॥ चारुशीला आदि सखी सुमन शृङ्गार किये । राजैं सिया सगे शोभा अति भारी हो ॥ ३ ॥ इतर फुहारन की त्रिविध समीर बहै । फूलन की चहु दिसि फूली फुलवारी हो ॥ ४ ॥ जानकी जीवन जी को सुमन शृङ्गार लखि । बरस सुमन सुर करैं जय जय कारी हो॥ ५ ॥

फूल बँगला पद ११

श्री सिया को राघव कीन्ह शृँगार ।

सुमन को लहँगा सुमन कंचुकी सिर पै सारी धारि ॥ पुष्पन भूषन बसन विभूषित पुष्पन के गले हार । सर्वेश्वरि श्री चारु-शीला जी गावत राग मलार । सुमन श्रृंगार दोउन को अनुपम शोभा अमित अपार ॥ जानकि जीवन नयनन लखिये जोड़ी परम उदार ॥

फुल वँगला पद १२

ललित पुष्पों के बँगले में श्री हनुमत आज बैठे है । अभयबर सब को देने को मुदित मन आज बैठे हैं ॥ मुकुट कुण्डल सुमन का है गले विचहार फूलों का, सभी श्रृंगार पुष्पों से सुसज्जित आज बैठे है । सिया रघुबर के प्यारे हैं कृपालू है दयालू हैं, जितिन्द्रिय बुद्धि के आकर सुधा के सिन्धु बैठे हैं ॥ कलपतरु सम सु भक्तों के हैं करते कामना पूरन, दरश कर जानकी

जीवन प्रफुल्लित आज बैठे हैं ॥

फूल बँगला पद १३

प्यारे की बाँकी झाकी निरख लो। तन घनश्याम अनोखी चितवन, मन्द हँसनि छबि अमिय सुचख लो। क्रीट चन्द्रिका की छबि अद्भुत, तड़ित विनिन्दित कुण्डल लख लो ॥ बँगला सुमन मध्य दोऊ राजत, पुष्पन के शृँगार सु लखलो। जानकि जीवन मन के भावन, मूरति दोऊ हिय भीतर रखलो ॥

फूल बँगला पद १५

पुष्प के बँगले में बैठे हैं रसिक बर देखलो। प्यारी अनुपम युगल जोड़ी नैन भर कर देखलो॥ हैं बसन भूषन सुमन के उड़ रही जिनकी पराग। कर रहीं सखियाँ बिजन सुन्दर सुमन को देख लो॥ कीजिये तन मन निछावर प्यारे के इस रूप पर। माधुरी

जोड़ी मनोहर सुखद सुन्दर देख लो ॥ जानकी जीवन की छबि है लाजते कोटिक मनोज । सन्त जन के प्राण धन दोऊ परस्पर देख लो ॥

फूल वँगला पद १५

हमारी सिया स्वामिनी की झाँकी अनुपम बाँकी । कोटिन काम लजावनि हारी, छबि अवधेश लला की ॥ सुमन शृगार किये दोऊ राजत, नहि कोऊ पट तर जाकी । सर्वेश्वरि श्री चारुशिला जी, द्यु ति मयंक सम ताकी ॥ दम्पति रुचिकर बिजन डुलावति, त्रिविधि समीर सु बाँकी । प्यारी को मुख प्यारो निरखत, अद्भुत छबि दरसाती ॥ ताकी शोभा को कवि बर्णे, शारद की मति थाकी । प्रमुदित देव सुमन झरि लावत, हर्षि अपसरा गाती । जानकि जीवन जोड़ी लखि के, सुर तिय

हिय हुलसाती ॥

फूल बँगला पद १६

क्या ललित पुष्पों का बँगला है छटा अनुपम अपार । कौन कवि वरणन करे छबि निधि स्वयं करते विहार ॥ सुमन की कलियाँ खिली हैं, उड़ रही जिनकी पराग । इतर केवड़ा की चहुँदिशि चल रही प्यारी फुहार ॥ पुष्पों का अद्भुत सिंहासन चँवर छत्र हैं सुमन के, दोऊ दिसि सखियाँ सुमन की लै बिजन करती हैं बयार । राजते है दम्पती, गुच्छा लिये सुमनो का कर, वह रही मारुत त्रिविध विधि हेम ऋतु सम है वहार । जानकी जीवन मुदित हैं स्वामिनि की छवि को लखे, पुष्प लैकर कन्ज में सिय की रहे आरति उतार ॥

नौका विहार पद १७

श्री सरयू मध्य प्रिया प्रीतम जू नौका

में बिहरते हैं। करोड़ों काम की छबि को ए लज्जित आज करते हैं ॥ सुमन शृंगार दम्पति का अनूपम अति मनोहर है। तकनि तिरछी व मुसकन मन्द से चितको ये हरते हैं ॥ विजन करतीं हैं सहचरियाँ दोउन के लखा के श्रम कण को, सिया रघुबर की शोभा देखि सुर जय जय उच-रते हैं ॥ सिया मुख कंज को लखि के बने मधुकर है रघुनन्दन, करै कवि कौन छबि वर्णन जो छबि सिन्धु बिहरते हैं। निरखि छबि जानकी जीवन सु दीजै वारि तन मन धन, दिखाकर चन्द्र मुख छबि को ये अपने बस में करते हैं ॥

नौका बिहार पद १८

सिया स्वामिनि के संग रघुबर सु नौका में बिहरते हैं। श्री सरयू जी मुदित होकर सु पय का धार वहते हैं ॥ बसन भूषन

सुमन के हैं किये शृँगार सब सखियाँ। परस्पर मिल के रति पति को ए लज्जित आज करते हैं॥ अतुल अनुपम मनोहर हैं सु नख शिख रूप के आगार। करे कवि क्या छवि बर्णन जो छवि निधि ही बिहरते हैं॥ हैं करती गान युवती जन मुदित होकर के बारम्बार, दर्शकर जानकी जीवन के सुर जय जय उचरते हैं॥

नौका विहार पद १९

सिया के संग श्री राघव जी ललित क्रीड़ा सु करते हैं। श्री सरयू मध्य नौका पर मुदित होकर विहरते हैं॥ हैं अगणित सहचरी संग में किये शृङ्गार फूलों का। लिये कर साजें सेवा की बिजन चाँवर सु ढरते हैं॥ सिया मुख कंज के ऊपर है रघु-बर श्याम घन छाये। ये छबि घन बिज्जु

की लखि के, विबुध जय जय उचरते हैं॥ करूँ वर्णन कहाँ तक ये अमित छवि जानकी जीवन। दरस देकर सु भक्तों के ये तीनो ताप हरते हैं॥

झूलन पद २०

भूलत नवल किशोर सिया संग।
श्री कनक-भवन हिंडोर कुञ्ज में, हरित घटा चहुँओर। नील पीत दोऊ मिलत हरित छवि, सुन्दर जुगल किशोर॥ बदन इन्दु अम्भोरुह लोचन हँसि हेरत मुख मोर। ललित सखी सब हिल मिल गावत, सरस राग हिंडोर। जानकि जीवन छवि को वर्णौं शारद मति भई भोर॥

झूलन पद २१

भूलत जनकजा रघुबीर।
हेम गृह में रुचिर भूलन सखिन की अति भीर, मुदित होय दम्पति सु भूलत बहत

त्रिविध समीर। जानकि जीवन दरस कर मिटी भव की पीर॥

झूलन पद २२

झूलन बाँकी हमारी हिय बस गई। घन दामिनि वर बरन युगल छबि, हरित छटाकी घटामें सुप्यारी छबि लसि गई। चन्द्र बदन सरसीरुह लोचन, द्युति दामिनि सिय प्यारी लाल मन बसि गई॥ मृग नयनी पिक बयनी सहचरि, छबि लखि रति सु लजात गरूरत खस गई। जानकि जीवन छवि को बर्णै, शारद हू सकुचात, प्रेम में फँस गई॥

झूलन पद २३

रघुवर की सुखदानि हिंडोरे झूले, कनक भवन हिंडोर कुञ्ज में, सुन्दर ललित वितान। रत्न जड़ित मणि परो हिंडोरा जगमग ज्योति महान,॥हिंडोरे।

मृदु मुसकान सिया प्यारी की, निरखत राम सुजान, हृदय लगाय महा सुख पावत, घन दामिनि लपटान, ॥ हिंडोरे ॥ अलि गन झमकि झुलावत दोउन, देत सुमुख में पान, जानकि जीवन के यहि रसको रसिक बिना को जान ॥ हिंडोरे ॥

झूलन पद २४

मन्द मन्द मुसक्यात हिंडोरे झूलै। चितवन चारु सिया जू के लखि के रघुबर हिय हुलसात, प्यारे पान खवावत प्यारीहि निरखि मनोहर गात ॥हिंडोरे॥ झोंका देत दोऊ दिसि अलियाँ अनुपम छबि दरसात, दम्पति प्रेम सुदय गलबाही मन बतलात ॥ हिंडोरे ॥ अरस परस दोऊ हिल मिल झूलत, शोभा किमि कहिजात, जानकि जीवन झाँकी निरखत आनन्द उर न समात ॥ हिंडोरे ॥

झूलन पद २५

झूलि रहे दोऊ चन्द, झूलन पर ।
कनक भवन में परयो हिंडोरा, जग मग ज्योति अमन्द ॥ झूलन ॥ आलिंगन गई सु पियही रिझावत उमगत उर आनन्द । झूलन ॥ झूलन झूलत हिय में फूलत, निरखत सिय मुख चंद ॥झूलन॥ जानकि जीवन झाँकी निरखत, होत दूरि दुख द्वन्द ॥ झूलन पर ॥

झूलन पद २६

निरखलो सखि ये झूलन पर मनोहर कैसी जोड़ी है । करूँ वर्णन कहाँ तक छवि, ये सुन्दरता न थोड़ी है ॥ हैं दामिनि वरण द्युति प्यारी, बने घनश्याम रघुनन्दन, तड़ित घन सी जुगल जोड़ी सभी के चित की चोरी है । सिया मुख कन्ज को इक टक निरखते हैं सु रघुनन्दन, चिके

बिन मोलही प्यारे भई सुधि बुधि सु भोरी है ॥ ये छबि बाँकी ललित झाँकी निरखलो जानकी जीवन, अतुल प्यारी नवल जोड़ी मदन रति को लजोरी है ॥

झूलन पद २७

हमारी स्वामिनी सिय जू सखिन संग झूलती झूला। कहै कबि क्या छबि बरणन जो हैं छबि सिन्धु सुख मूला ॥ किये शृङ्गार सखियाँ सब सुदम्पति को झुलाती हैं, सरस हिडोर गाती हैं मुदित हो करके हिय फूला। सिय मुख कन्ज श्रम कण लखि डुलाते हैं बिजन रघुबर, निरखि अंग अंग की शोभा, सु रति पति देंह सुधि भूला ॥ बसा कर हिय में अनुपम छबि मुदित हो जानकी जीवन ये मन मन्दिर रहें निसि दिन सदाही झूलते झूला ॥

झूलन पद २८

हमारी सिया स्वमिनी को राघव मोद बढ़ावैं । झोंका देत बदन छबि निरखत नयन से नयन मिलावैं ॥ बदन इन्दु श्रम बिन्दु सु लखिके, प्यारे बिजन डुलावैं । हमारी ॥ अवलोकत भरि नयन मधुर छबि, आनन्द सिन्धु समावें । बिधु बदनी मृग नयनी सहचरि बार बार बलिजावैं ॥ हमारी ॥ कनक भवन हिंडोर कुञ्ज में पिय प्यारी सुख पावैं । सुषमा निरखि विवुध तिय हरषैं सुमन वृष्टि झरिलावैं ॥ हमारी ॥ जानकि जीवन शरन मुदित हो सिय चरनन चित लावैं । दम्पति शोभा को कवि बरणैं शेषौ पार न पावैं ॥हमारी॥

झूलन पद २९

लखि लालन मुसुकयात, झूलन पर, वय किशोर सुकुमार मनोहर, छबि घन-

श्याम लखात, ॥झूलन॥ चन्द्र बदनि सिय स्वामिनि मोरी, दुति दामिनि दरसात ॥झू॥ सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जी दम्पति मों बतरात ॥ झूलन ॥ हर्ष झुलावहिं शान गुमाननि सखियाँ हिय हुलसात ॥झूलन॥ जानकि जीवन झाँकी निरखत रति पति कोटि लजात ॥ झूलन ॥

झूलन पद ३०

जानकि जानकि जान हिंडोरे झूलैं। मृग नयनी शशि बदनी सिय जू, रघुबर श्याम सुजान ॥ हिंडोरे ॥ दम्पति के हिय सुख उपजावत, लेत नई नई तान ॥ हि ॥ जानकि जीवन तन मन वारत लखि मधुरी मुसुकान ॥ हिंडोरे ॥

झूलन पद ३१

झूलि रहे दोऊ चन्द झूलन पर। बिधु बदनी सिय स्वामिनि मोरी, रघुन-

न्दन जनु इन्दु ॥झूलन॥ अङ्ग अङ्ग अगणित अनंग छबि, शोभा सुख के कन्द ।झू। जानकि जीवन अनुपम जोड़ी, घन दामिनि इक संग ॥ झूलन पर ॥

झूलन पद ३२

हमारे प्यारे लालजी को सखियाँ सब झुलावें । झुकि झुकि झमकि झुलावहिँ झूलहिँ, सियजू अति सुखपावें । प्यारी को मुख निरखि सु प्यारो, पुनि पुनि कंठ लगावें ॥ हमारे ॥ बिहँसि झुलावत सिय को प्यारो मन में मोद बढ़ावें । श्रम लखि विजन डुलावत सहचरि बार बार बलि जावें ॥ हमारे ॥ कनक भवन हिंडोर कुञ्ज में दम्पति अति सुख पावें । झूलन झूलत दे गलबाँही उर आनन्द न समावें । हमारे ॥ जानकि जीवन झाँकी लखि के कोट मनोज लजावें । कहि जय जय

रसिक शिरोमणि देव सुमन झरिलावैं ।ह।

झूलन पद ३२

हमारी सिय स्वामिनी को राघव जी झुलावैं। झुकि झुकि प्यारी को मुख निरखत, रुचि सों पेंग बढ़ावैं। दोउन के श्रम सींकर लखि के सखियाँ बिजन डुलावैं॥ हमारी ॥ सर्वेश्वरि श्री चारुशीला जी राग मलार सु गावैं। कोकिल कंठ लजावनि हारी, अनुपम भाव बतावैं ॥ हमारी ॥ दम्पति की झाँकी को निरखत रति पति कोटि लजावैं। ताकी शोभा को कवि बरणौं शेषौं पार न पावैं ॥ हमारी ॥ कनक भवन हिंडोर कुञ्ज लखि आनन्द उर न समावैं, कहि जय जय जय जानकि जीवन देव सुमन झरिलावैं ॥ हमारी ॥

झूलन पद ३३

क्या ललित झूलन की झाँकी मन

हरन बाँकी है ये । प्रेम के रस में पगी छवि सब के मन भाती हैं ये ॥ दे रहे झोंका सु प्यारे प्यारी को मुख कंज लखि, कर दिया तन मन निछावर सखियाँ हरषाँती हैं ये ॥ रूप दोनो का मनोहर निरखि सुर नर मुनि ठगे, ले लिया चित को चुरा, चित चोर कहलाते हैं ये ॥ जानकी जीवन को लखि के करते हैं सुर जय जयकार, पुष्प बरसाते मुदित मन अप्सरा गाती हैं ये ॥

झूलन पद ३५

झूलत राजीव नैन सिया संग ।
सहचरि हरषि झुलावत झूलत, लखि लखि सिय की शयन । सिय मुख चन्द्र चकोर सु प्रीतम रसिकन के सुख दयन ॥ जानकि जीवन छवि को लखि के लाजत कोटिक मयन ॥

### झूलन पद ३६

सखिन संग झूलत सिय सुकुमारि। झोंका देत श्री जानकी जीवन सिय रुचि के अनुहारि ॥ गावत राग श्री चारुशीला जी सखियन की शिरदारि ॥ सिय को बदन विलोकत प्रीतम, देत सु तन मन वारि। झूलन कुंज अनूपम झाँकी शोभा अमित अपार ॥

### झूलन पद ३७

सिया संग झूलत श्याम सुजान। झोंका देत दोऊ दिसि अलियाँ, शोभा ललित ललाम ॥ मन्द मन्द मुसुकात परस्पर लखि लाजत रति काम। अलि गन गावति पियहि रिझावत छबि निरखत सुखधाम। जानकि जीवन झाँकी लखि के होत सु पूरन काम ॥

## झूलन पद ३८

धीरे धीरे झूलो रघुराज यार मेरे सावन में। अवलोको भरि नयन लली छबि मन्द मन्द मुसकान, अमिय बरसावन में॥ तुम कठोर चित चोर सांवरे, सिय जू अति सुकुमार, दया दर सावन में। लाजत कोटि मनोज रूप लखि, चितवन छबि सु महान तड़ित सर सावन में । जानकि जीवन झांकी निरखत, विबुध हिये-हरषान सुमन झरिलावन में ॥

## झूलन पद ३९

युगल सरकार झूलन पर मुदित मन हो विहरते हैं । करोड़ो काम की शोभा को लज्जित आज करते हैं । जटित मणियों से कन्चन का बना अनुपम ये झूला है झुलाती हैं सखी अगणित विजन चाँवर

सु ढरते हैं। हैं गाती राग सहचरियां सु स्वर हैं कंठ कोकिल का। ये पिकवयनी के गायन सुन मुनिन के ध्यान टरते हैं। ललित हैं कुञ्ज झूलन की घटा छाई हरियाली, मयूर आदिक सुपक्षी गण मुदित हो नृत्य करते हैं। अमित छवि जानकी जीवन करे गा क्या कवि वरणन, निरखि के देवगन हरषित सुमन की वृष्टि करते हैं।

झूलन पद ४०

युगल वर आज सावन में मुदित हो झूलते झूला। झुलाती हैं अमित सखियाँ सु देकर प्रेम का हूला॥ लुनाई सिया के मुख की श्री राघव जी निरखते हैं, झमकि झुकि झोंक दे प्यारे सु छबि लखि देह सुधि भूला। करे कवि क्या छवी वरणन है दम्पति रूप के आगार, निरखि छवि जानकी

जीवन विबुधनभ बरसते फूला ॥

### झूलन पद ४१

किशोरी जी के संग झूलत रघुनन्द । अवलोकत भरि नयन सिया मुख, फंसे रूप के फन्द ॥ मृदु मुस्कान विलोकत सिय की रघुबर आनन्द कन्द । छबि को निरखि हिये में हरषत गान करत सखी वृन्द ॥ दम्पति मुदित दिये गलबाँहीं पावत अति आनन्द । जानकि जीवन झाँकी निरखत पावत परमानन्द ॥

### झूलन पद ४२

झुलै सिय स्वामिनि सकल सुख ऐना । श्री रघुबर की प्राण प्यारी नव सरोज लोचन सुख दैना । सहज सलोने सुठि सुकु-मारी उमा रमा इन सम कोऊ हैना । ललि-त लुनाई प्यारी की लखि रघुनन्दन के

फंसे दोउ नैना। मृदु मुस्कान माधुरी मूर-
ति बिन देखे जी को नहि चैना॥ जानकि
जीवन झाँकी निरखत उपमा कोऊ देत
बनैना॥

झूलन पद ४३

मनावत सिय जू के सुखदानी।
नख शिख हेरत प्यारी छवि को रघुनन्दन
चक्रपांणी। उमाँ रमा ते अधिक छबी लखि
बोले हंसि मृदु बानी। जनक सुता मम प्राण
पियारी रघुकुल की पटरानी। झूलन झूलि
ताप मम हरिये कृपा रूप कल्याणी। सुनि मृदु
बचन प्रिया प्रीतम के सब सखियाँ मुस्कानी।
दम्पति झूलत दे गलबांहीं हरषि हिये सुख-
मानी, जानकि जीवन छबि को बरनै, मति
सुख सिन्धु समानी।

झूलन पद ४४

आई सावन की बहार परतीं बूंदन की

फुहार, झुलैं स्वामिनि श्रीसरकार शोभा अमित बनी। झुलावैं रघुनन्दन सरदार सिया को कञ्ज मुख निहार, हिय में हरषे बारम्बार सु रघुकुल के मनी। सखी सबगाती हैं मल्लार, कंठ कोकिल है स्वर अपार, सिया श्री स्वामिनी हमार, मिथिलेश की धनी। दम्पती छबि के हैं आगार सभी ये सुषमा के हैं सार, देव गन करते जय जय कार, बजावैं दुन्दुभी घनी॥ जानकी जीवन श्री हर्ष अपार, जोड़ी अद्भुत परम उदार, सु बरनत पावै शेष न पार, हैं जिनके सहस्त्र फनि॥

झूलन पद ३५

हिंडोरे झूलत दोउ हुलसाय।

घन दामिनि बर बर्ण दोउन की, अद्भुत छबि दरशाय। अङ्ग अङ्ग में अगणित अनंग छबि, चितवनि मनहि लुभाय॥

अमित निकाई सिय के मुख की, लालन मनहि रिझाय, जानकि जीवन सखियन के संग, झोंका दै सुख पाय ॥

रास पद झपताल ४६

रसिक शिरोमणि कनक भवन मध्य, राजत सिय संग अति सुखदायी । अङ्ग अङ्ग अगनित मदन विमोहत, छबि लखि प्यारी प्यारी रतिहू लजाई ॥ प्यारी सुख दायक रघुबर के संग, चारुशीला सर्वेश्वरि राग गाई । सकल कलन युत उदित मयंक से, अनुपम छबि लखि हिय हरषाई । जानकि जीवन शरन सिया के, सखियन के संग सुख अति पाई ॥

रास पद ४७

हमारी सिय स्वामिनी संग निरतत रास बिहारी । कनक भवन श्री रासकुञ्ज

में भीर सखिन की भारी ॥ अगनित सहचरि नाचत गावत दम्पति की सुखकारी। घन दामिनि बर बरन दोउन छबि शरद चंद उजियारी । लचकनि मचकनि रति पति लखि के दीन्ह सु तन मन वारी ॥ नभ प्रसून बरसत सुर हरषत बोलत जय जय कारी। जानकि जीवन छबि को बरने शारद की बुधिहारी ॥

रास पद ४८

पिय प्यारी रास करत मुदसों संग चारुशिला गुण आगरिया । बहु भाव कटाक्ष सों नृत्य करे पिय के संग में नव नागरिया। कर कंज गहे मुख कञ्ज बिलोक सिया सुख सिन्धु की आगरिया। बहु प्रेम प्रमोद सों रास करें श्री दम्पति आनन्द सागरिया। छबि जानकि जीवन को बरनें भई सारद की बुधि बावरिया ॥

## रास पद ४६

किशोरी तेरो नयंना मद सों भरे। चितवनि ही मोहि घायल कीन्हों, कछु नहि सूझ परे॥ मदन कृशान व्यथित कर दीन्ही, शिथिल अंग सवरे। गद गद कंठ बचन नहि आवत, बदन सों स्वेद झरे॥ मार दर्द की औषधि प्यारी, हिय लगि पीर हरे। जानकि जीवन प्यारी छबि को प्यारो ध्यान करे॥

## रास पद ५०

छयल तेरी चितवन मदन कटार, चितवत मोहि कतल कर दीन्हो रही न देह सम्हार। मन्मथ व्यापेऊ सकल अंग अंग कम्पित गात अपार॥ बाँणी प्रगट होत नहि मुख से नयनन झरति सुवार। जानकि जीवन हृदय लगाले तूही मेरा दिलदार॥

रास पद ५१

सिया जू स्वामिनी रघुबर मुदित मन रास करते हैं। ललित अंग लखि सु प्यारी के मदन रति को निहरते हैं॥ करै बरणन परस्पर दोऊ सकल अंग अंग की शोभा। हसनि हेरनि सु लखि सिय की छबि का ध्यान करते हैं॥ बदन सुन्दर मनोहर है शरद शशि पूर्ण आभा के, करे प्रकाश क्या चन्दा जो जुग चन्दा बिहरते हैं॥ हैं अगनित सहचरी संग में सर्वेश्वरी चारुशीला जी, रुचि को लखि सु दम्पति की परस्पर रास करते हैं॥ निरखि छबि जानकी जीवन युगल छबि की लुनाई को, विबुध हरषीं विमानन चढ़ सुमन की वृष्टि करते हैं॥

रास पद ५२

पिय प्यारी दोऊ रास करत।

कनक भवन मध्य सखिन संग, निरतत हैं दोऊ गान करत। आनन प्रसन्न मृदु मन्द हसनि, दम्पति रति पति को मान हरत॥ सिय मुख चन्द्र सुधा रस लोभी, राम रसिक रस पान करत। जानकि जीवन सिय के पगकों, नूपुर को नित ध्यान धरत॥

रास पद ५३

सखी लखु सिय रमन चित चोर।
शरद् पूर्णिमा चन्द्र चाँदनीं छिटक रही चहुँओर। कनक भवन श्री रास कुञ्ज में निरतत युगल किशोर॥ श्री चारुशिला संग अलि बहु गावत, राग रागिनी कर कलशोर। दम्पति मुख मयंक को रति पति निरखि दृगत की कोर, कहि जय जय जय जानकि जीवन जय रसिकन चित चोर॥

...शोध संस्थान 16886 ...

शरद पद ५४

पावस पराई ऋतु शरद अवाई जान,
उदित अगस्त पंथ जलको सुखाते हैं।
फूले बन काँस बहु विमल प्रकाश लखि,
पथिक समाज निज काजन को जाते हैं॥
मालती के फूलन पर अलिगन गूँज रहे,
खञ्जन सु नृत्य सिय पिय को दिखाते हैं।
कनक भवन मध्य जानकी जीवन आज,
जुग अरविन्द मुख इन्दु को लजाते हैं॥

शरद पद ५५

कनक भवन मध्य सिय पिय छवि लखि,
सकल कलन युत कियो है प्रकाश इन्दु।
रास को समय जानि सिय रुख पहिचानि,
चारुशिला आदि सखियन को रूप सोहत
अमंद। कोई करे गान बहु नृत्य सु करन
लागी, अलिन मध्य सोहे एक एक रघु-
नन्द। जानकि जीवन सुर तिय वनि निर

खत, सिय मुख इन्दु आगे फीको है शरद चन्द ॥

विबाह पद ५६

सिया स्वामिनि बना रघुबर की क्या अनुपम ये जोरी है। सकल अंग अंग की शोभा करो बर्णन सो थोरी है ॥ मनोहर मौर मौरी की अमित छवि क्या करू बर्णन, जटित भूषन बसन सुन्दर सु द्यु ति दामिनि लजोरी है। हँसनि हेरन व मृदु मुस्कनि अतुल अनुपम मनोहर है, सुघरता श्री लली जू की लला के चित को चोरी है। हरषि हिय जानकी जीवन निरखे छवि है बारम्बार, लगा कर प्रेम सिय जू से जगत का नात तोड़ी है॥

विबाह पद ५७

सिय बनरे की छटा अति प्यारी। ककि कंठ दुति ललित सकल अंग, तिरछी

तकनि कतल कर डारी। मन्मथ कोटि लजावनि हारी सुन्दरता, अखियाँ रत-नारी ॥ जनक नगर नर नारिन के चित्त चोरन के हित बने शिकारी, सिय मुख चन्द सुधा अवलोकत दृग चकोर भये सुधि बुधि हारी। जानकि जीवन गृह सुधि भूली लगी ललित मिथिला ससुरारी ॥

विवाह पद ५८

ये अनुपम प्रेम की मूरति, सिया स्वा-मिनि का दूल्हा है । सु नीरज नयन घन दामिनि की जोड़ी क्या अतूला है ॥ जटित मणियों से मंजुल मौर है शोभित ललित माथे पै बसन भूषन व जामा पीत सुन्दर छबि का मूला है । युगल छबि जानकी जीवन बसालो हिय के अन्दर में, ये दम्पति की मधुर झाँकी दृगन के बीच भूला है ॥

विवाह पद ५९

बना की छबि प्यारी प्यारी बनी।
श्याम सरोज बदन रघुबर को, सिय चम्पक बदनी। माथे मौर मनोहर सोहत मौरी जटित मनी॥ प्यारो बना बिलोकि बनी को भूली सुधि अपनी। एक से एक छबी दोऊन की शोभा अमित घनी। जानकि जीवन शरन दरस करि जय जय देवन भनी॥

विवाह पद ६०

सिय बनरे की लखो छबि प्यारी।
सोहत मौर मनोहर माथे, सेहरे की लट-कनि क्या न्यारी। वयस किशोर मार मद मोचन चितवन चित की चोरनि हारी॥ सीय राम दोऊन की छबि पर रति पति कोटि कोटि बलिहारी। जानकि जीवन अवध बने से, लगा प्रेम भूल्यो घरबारी॥

विवाह पद ६१

सबन मिलि दूलह निरखोरी।
लाज सब मग में पट कोरी॥
दोहा :—छबि निरखत भई बावरी,
जनक पुरी की नारि।
सिय को देखत पिय बिके,
दीन्ही तन मन वारि॥
बदन लखि हिय अति हुलसो री। सबन।
दूल्हा आलिन मन हरयो,
नयनन शयन चलाय।
प्रेम की मूरति निरख के,
सबहि लियो अपनाय॥
भयो सिय मन को भायोरी॥ सबन॥
श्याम बने घनश्याम छबि,
सिय जू तड़ित लखाय।
प्यारे की अद्भुत छटा,
शोभा अति दरसाय॥

छबी अति प्यारी अनुपमरी ॥ सबन ॥
ब्याह विभूषन साज को,
बरणन कापै होय ।
जानकि जीवन मद भरे,
उपमा जाय न जोय ॥
भयो सुख हिय अति हरष्योरी ॥ सबन ॥

बिदाई पद ६२

छयल दिल लेके अवध जाते हो ।
सुरति तिहारी हिये में बसि गई, अब क्यों सजन मोहि तरसाते हो ॥ छयल ॥ कब अइहौ मिथिला रघुनन्दन, साँची कहो क्यों सकुचाते हो ॥ छयल ॥ लालन फँसे ननद के फन्दे, ताते तरस नहि जिय लाते हो। जानकि जीवन प्रेम लगा के, क्यों बिरहिन को तड़पाते हो ॥

बिदाई पद ६३

अवध क्यों जाते हो मेरे यार ।

प्रेम लगा के चित को चुराके, अब क्यों तरसाते मेरे यार ॥ सिय स्वामिनि संग मिथिला रहिये, सुन मेरे दिलदार। जानकि जीवन सब सखियन का, तूही राजकुमार ॥

आरती पद ६४

आरती अवध बिहारी की, श्रीरघुबर राज दुलारी की। बदन की द्युति मयंक दमकै, दामिनि घन में ज्यो चमकै, मुकुट कुण्डल की छबि छलकै, सु रति पति मद के हारी की॥ आ ॥ अनूपम सुन्दर जोड़ी है, सु चितवन चित को चोरी है, सखी संग लाख करोरी हैं, प्रिया प्रीतम सुखकारी की॥ आ ॥ लिये कोउ छत्र विजन ठाढ़ी, सु दम्पति छबि पर मतवारी, हैं करती तन मन बलिहारी, सु छबि लखि राम बिहारी

की ॥ आ ॥ छबी लखि जानकी जीवनकी, न कोई पटतर है जिनकी, सु बरसत सुमन हिये हरषीं, बिबुध गन जय जय कारी की ॥ आरती ॥

आरती पद ६७

नख सिख छबिधर की, आरती करो रसिक बर की। श्याम तमाल जलद तन सोहै, भाल तिलक मुस्कन मन मोहै, उपमा खोजत कबि सकुचो हैं, मुकुट चन्द्रिका कुण्डल की। अरुण कञ्ज दल लोचन शोभित, पीत बसन भूषन छबि अद्भुत, जगमग करत हरत दामिनि द्युति अरुण चरण पंकज नख की ॥ कोटिन सहचरि नृत्य करति हैं, बहु तक ठाढ़ी छबि निरखत हैं, मधुरे स्वर बहु यंत्र बजति हैं, मुनि मन मोद बढ़ावन की। अनुपम छबि बर्णीं नहिं जाती, दम्पति लखि सखि बलि

बलि जाती, सुरति पति हर्षि सुमन बरसाती, कहि जै जानकी जीवन की ॥

पद ६६

नाम जपत रघुनन्दनकिशोरीजी को। श्री सिय सीते रटत निरन्तर, निरखत रूप अमन्द ॥ मुख सुन्दरता निरखि मनहि मन, पावत अति आनन्द । अति प्यारी स्वामिनि सखियन की, मेरे सुख की कंद । जानकि जीवन दरश किये ते, होत दूर दुख द्वन्द ॥

पद ६७

प्यारी री तेरी तिरछी नजरिया। ललित सकल अंग छबि को बर्णौं, कोटि मदन रति वारी री ॥ तेरी ॥ रघुनन्दन चित चोर साँवलिया, चित के चोरन हारी री ॥ तेरी ॥ दामिनि बरण श्याम घन हिय में, सुन्दर रूप उजियारी री ॥ तेरी ॥ सन्त

जनन की इष्ट देवता, सखियन की सुखकारी री ॥ तेरी ॥ जानकि जीवन बदत मुदित ह्वै जीवन प्राण हमारी री ॥ तेरी॥

पद ६८

छयल चितवनियाँ अजब दिलदार।
मृदु मुसक्याय तिरीछे नयनन मारत मदन कटार ॥ केकि कंठ द्युति श्यामल अंग पर, लाजत कोटिन मार। जानकि जीवन रूप निरखि के रहत न देहँ सम्हार ॥

पद ६९

ललन तेरी मुसकनि जुलुम करे।
मन्द मन्द हँसि जेहि तन हेरत, ताको प्राण हरे ॥ चितवनि चारु जहर जादू की, निरखत कतल करे। जानकि जीवन शरण सिया पद गहि भव सिन्धु तरे ॥

पद ७०

नयन तेरे बाँके रे साँवलिया।

तिरछी तकनि मन्द हँसि हेरनि, कोटिन काम लजा के रे साँवलिया ॥ सुन्दर बदन मनोहर मूरति, अतुल सरूप सुधा के रे साँवलिया । जानकि जीवन छबि अति प्यारी, बरणन शेषहु थाके रे साँवलिया ॥

पद ७१

प्यारे रे तेरे नयना रसीले ।

भृकुटी बंक सरोरुह लोचन, मन्द हँसनि गर्वीले रे ॥ तेरे ॥ कोटि मनोज लजावनि हारे, सिय छबि सों शरमीले रे ॥ तेरे ॥ सिय सुन्दरता निरखि अनूपन, तन मन की सुधि भूले रे ॥ तेरे ॥ घन दामिनि बर बरण युगल छबि, रति पति कोटि लजीले रे ॥ तेरे ॥ जानकि जीवन दरश करत ही, सकल सुकृत फल मीले रे ॥ तेरे ॥

झाँकी पद ७२

देखो झाँकी ये बाँकी कैसी बनी ।

बैठे दोनो सरकार छबि छाई अपार, नहि तन की सम्हार, ऐसी रस में सनी ॥देखो॥ कीन्हे अनुपम शृङ्गार, अली अमित अपार, सिय स्वामिनी हमार सुख मानै घनी ॥ देखो ॥ प्यारी बदन निहार, प्यारे करै अति प्यार, दीन्हो तन मन को वार, रघुकुल के मणी ॥ देखो ॥ जानकी जीवन शरण, सब दुख के हरण, नभ बरसै सुमन बहु सुर रमणी ॥ देखो ॥

झाँकी पद ७३

युगल छबि बाँकी आज बनी ।
शोभा अयन मयन से सौगुन, सुन्दर छबि छवनी । जलज नयन सुन्दर सु मनोहर चितवनि मन हरनी ॥ मृदु मुसकानि माधुरी मूरत, घन दामिन बरनी । जानकि जीवन छबि को बर्णै, सुन्दरता जु धनी ॥

विनय पद ७४

दीन दयाल प्रणति आरति हर, अब करते क्यों नहि दाया। आरति हरण प्रणत जन पालक, वेद तिहारो यश गाया॥ हौं लालची लबार प्रपंची, शरण तिहारी आया हूँ। पाप पीनता देखि दयानिधि, क्यों डरते हो रघुराया॥ पाहन पशु पतंग गणिकादिक, इनको कैसे अपनाया। कीजै कृपा जानकी जीवन, त्रिभुवन तेरो यश छाया॥

विनय पद ७५

पतित पतित-पावन के आगे, बारबार कर जोरि रहा। काम क्रोध मद लोभ भरो मैं, शरण तिहारी आय गहा॥ अति विषयी क्रोधी अरु कामी सकल दोष को कोष महा। त्रिविध ताप संताप व्यथित हो हारि हहरि करि खात हहा। अवगुण

अमित अधम अपराधी, मन मलीनता कहूँ कहा। प्रणतपाल शरणागत वत्सल, कृपा रावरी चाहि रहा। सब सुख खानि जानकी जीवन, शरण चरण तव आइ गहा॥

विनय पद ७६

बिनय हमारी सुनो दयानिधि, दीन बन्धु कहलाते हो। सकल दोष को कोष जानि मोहि, कृपा करत सकुचाते हो॥ गणिका गीध अजामिल आदिक, इनको तो अपनाया है, अवगुण अमित जानि प्रभु मेरे, पापों से घबराते हो॥ आरति हरण पतित पावन यश निगमनेति करि गाते है। पाप खानि मोहिं जानि प्रणत हर, बिरदावली भुलाते हो॥ जानकि जीवन शरण लीजिये, करुणा करि कीजै दाया। शरणागत वत्सल रघुनन्दन, निज

मुख ते तुम गाते हो ॥

विनय पद ७७

रे मन शरण सिया जू की गहिये । अमृत नाम सुधा रस पीजे, सीते सीते कहिये । सिय वर चरण कमल रति उपजै, बिमल भक्ति को लहिये ॥ युगल माधुरी रूप निरखि के, त्रिविध ताप नहिं दहिये । जानकि जीवन शरण में रहिके, सुख समुद्र में बहिये ॥

पद ७८

दशरथ जी के आँगनवाँ में, खेलत चारिउ भइया हे । राम लखन अरु भरत शत्रुहन, शोभा बरणि न जइया हे ॥ पीत झीन झँगुली तनु शोभित, अद्भुत छबि दरशइया हे । किलकनि नटनि हरत मुनि मन को, नूपुर की बजनइया हे ॥ पारब्रह्म ह्वै महि में बिचरत, भक्तन को सुखदइया

है। कौशिल्यादिक मातु मुदित मन, पुनि पुनि लेत बलइया है। जानकि जीवन मुदित विलोकत, आनन्द उर न समइया है॥

पद विनय ७९

शरण तेरी आयो जानकि नाथ।

दीन दयाल प्रणत आरत हर, कृपा सिन्धु रघुनाथ॥ बिनु तव कृपा न बनै कोटि युग, धुनत रहौं मैं माथ। तुम पल माहिं सुधारत रघुबर, वेद विदित गुण गाथ॥ काम क्रोध मद लोभ भरो मैं, ज्यों क्रमनासा पाथ। जानकि जीवन तव पद सुरसरि, गहि के होव सनाथ॥

पद विनय ८०

जनक किशोरी कृपा अब कीजै॥

निज कर्मनि भव सिन्धु परो मैं, कीजै कृपा बाँह गहि लीजै। हौं तव कृपा रूप की

प्यासी, दर्शन दै सुख दीजै ॥ तव चरणन की हूं मैं दासी, जस चाहो तस कीजै। जानकि जीवन दरश दिखा के निज सेवा में लीजै ॥

पद ८१

करो रे मन गुरु चरणन की आस। जिनको ध्यान करत अघ नाशत, मिटत सु जम की त्रास ॥ सियबर भक्ति बढ़त सुमिरन ते, करत कृपा रघुनाथ। जानकि जीवन शरण में रहि के, गावो सिय गुण गाथ ॥

पद बिनय ८२

करते नहीं दया तो दया निधि न कहावो।
निर्दय बनो तो आप और नाम धरावो ॥
शवरी व गीध आदि से पाया जो नाम था।
मुझ से अघी को त्याग नहीं नाम गमावो ॥
तारो चहै न तारो इच्छा है आपकी।

मुद्दत से पड़ा नाम नाथ इसको बचावो ॥ सृष्टि स्थिति लय कारणी सिय स्वामिनी जू हैं। उनकी कृपा से जानकी जीवन ही कहावो ॥

पद झाँकी ८३

कैसी है अनुपम ए झाँकी बाँकी झाँकी देखलो। करके तन मन धन निछावर मन के भावन देख लो ॥ साँवरी सूरत मनोहर सीय मुख द्युति में पगी। मन्द मुसकनि चारु चितवनि नयन भर कर देख लो ॥ रूप दोनों का मनोहर कौन कबि बर्णन करे। सिय की छबि पिय से अधिक दोउ परस्पर देख लो ॥ जानकी जीवन की जोड़ी नयन मग हिय में बसा। मग्न हो सुख सिन्धु में छबि सिन्धु प्यारा देखलो।

पद ८४

देखुरी मोरी गुइयाँ जुगल वर।

विधु बदनी सिया स्वामिन मोरी, केकि कंठ द्युति मइयाँ ॥ दम्पति बदन अनूपम झाँकी, चितवनि चित चोरइयां । जानकि जीवन छबि बर्णें किमि, रति पति कोटि लजइयां ॥

पद ८८

हमारी सिया स्वामिनी संग राजत राघव प्यारे । सुमन शृङ्गार किये दोउ अनुपम, सुमन गुच्छ कर धारे ॥ हमारी ॥ सुमन चन्द्रिका मुकुट मनोहर, मन्द हँसन रुचि कारे ॥हमारी॥ चितवनि चारु मोहनी मूरति, शोभा अमित अपारे ॥ हमारी ॥ सुमन महल में राजत दोउ, सखियन प्राण अधारे ॥हमारी॥ जानकि जीवन की झाँकी लखि, रति पति तन मन वारे ॥ हमारी ॥ सुर प्रमुदित ह्वै सुमन वृष्टि कर, बोलत जय जय कारे ॥ हमारी ॥

पद ८६

जुगल रूप को ध्यान करोरे मन। शरद चन्द सम जनक नन्दिनी, रघुनन्दन घनश्याम॥ करो॥ पीताम्बर रघुबर तन शोभित, सिय तन सारी श्याम॥ करो॥ निज कर पान खवावत प्यारे, सिय जू के सुख दान॥ करो॥ जानकि जीवन के यहि रस को, रसिक बिना को जान॥करो॥

पद ८७

सियाबर के चरण में चित लगा ले जिसका जीचाहे। अनेकों जन्म की बिगड़ी बनाले जिसका जी चाहे॥ विविध जप जोग ब्रत करके, हैं धरते ध्यान सुर नर मुनि। उन्ही दम्पति की अनुपम छबि, निरख ले जिसका जी चाहे॥ है सुर दुर्लभ मनुज का तन, जो पाया सिय की करुणा से। सदा सन्तन की संगत कर, समझ ले

जिसका जी चाहे ॥ जो सूक्ष्म स्थूल कारण से, परे वय है उसी में जा। जुगल रस रूप की झाँकी, को करले जिसका जी चाहे ॥ कठिन माया प्रभु की है, न कोई पार पाता है। शरण जा जानकी जीवन की, तरले जिसका जी चाहे ॥

पद झाँकी ८८

छटा आज की प्यारी प्यारी मुबारक। सदा राम के ये बिहारी मुबारक॥ झाँकी अनुपम करै कौन बर्णन। सिया राम की जुग्य जोड़ी मुबारक ॥ बिबिध भाँति के वस्त्र भूषण विभूषित। सिया सिर हो जर-तारी सारी मुबारक॥ निछावर करें प्राण धन दम्पती पर। सदा सुर करें जय जय कारी मुबारक॥ जानकि जीवन छबी को निरख कर। करें अपसरा नृत्यकारी मुबारक ॥

पद झाँकी ८६

मैं तोपै बलिहार जाऊँ सिया रघुरइया। शरद चन्द्र सम मुख छवि शोभित, मुसुकनि वर्णि न जइया॥ नीरज नयन ललित चितवनि प्रिय, भृकुटि मनोज लजइया। राजत भाल तिलक केशरि को, नाशामणि सुखदइया॥ मै॥ मुकुट चन्द्रिका की छवि अद्भुत कुण्डल की झलकइया। उर मणि माल पीत पट राजत, दामिनि द्युती हरइया। बैठे कनक भवन सिंहासन, नित प्रति रास रचइया॥ मै॥ कोटिन सुर प्रमदा बनि आवत, दम्पति छवि निरखइया। बिन सिय कृपा मिलै नहिं यह सुख, कोटिन करो उपइया॥ मै॥ अगणित सहचरि नाचत गावत, कोकिल कंठ सुहइया। ताकी शोभा को कवि बर्णे, शेषहु मन सकुचइया॥मै॥ शरण जानकी

जीवन जू की, है भव फंद छोड़इया। अति दुस्तर संसार तरन को, चरन कमल सुखदइया ॥ मैं ॥

पद ६०

छबि लखु रघुबर मन्द हँसन की। मन्द हँसन की कांति दसन की ॥ भृकुटि बंक सरोरुह लोचन, निरखि रहत सुधि नाहि बदन की। सुर पुर तुच्छ सुरेशहिं लागत, निरखि जुगल छबि कनक भवन की। जानकि जीवन छबि अवलोकत, रहत काहि सुधि अपने सदन की ॥

पद ६१

प्यारे राघव से नयना लगाइ आई। जुगल माधुरी मूरति लखि के, बिनही मोल बिकाय आई। लोक और परलोक की लज्जा, प्रियतम पग लपटाय आई ॥ कहा करौं सखि कल न परत मोहिं बिन देखे

प्रीतम रघुराई । जानकि जीवन शरण जाइके, भव की त्रास मिटाय आई ॥

पद ६२

जोड़ी जुगल मनोहर सजनी, निरखहु भरि भरि नयना हे । जनक नन्दिनी अरु रघुनन्दन, हैं सब सुख के अयना हे ॥ रघु-बर की छबि नील कंज सम, सिय छबि की नहि उपमा हे । स्वामिनी के सिर सारी शोभित, रघुबर पीत बसनमा हे ॥ दोउन के सिर मुकुट चंद्रिका, रवि शशि द्युती हरनमा हे । विविध भाँति के बसन विभूषण, जगमग करत नगनमा हे ॥ दम्पति शोभा को कवि वर्णों, शेषहु मन सकुचनमा हे । भव बन्धन की छोरन हारी, जानकि जीवन शरणमा हे ॥

पद ६३

लोक लोचन की सुख देनी, युगल सर-

कार की झाँकी । सकल अघ पुञ्ज की हरणी, जुगल सरकार की झाँकी ॥ लजाते कोटि रति पति हैं, निरखि छबि दम्पति की अनुपम । हँसनि हेरन में बस करनी, युगल सरकार की झाँकी ॥ अतुल अनुपम मनोहर है, ए राजित नयन के दर्शन । कठिन भव सिन्धु की तरणी, युगल सरकार की झाँकी ॥ मुकुट और चन्द्रिका सिरपर, तिलक है भाल में सुन्दर । रवी शशि की प्रभा हरणी, युगल सरकार की झाँकी । किये हैं सोलहों श्रृङ्गार, अनुपम जानकी जीवन । जनन को इच्छित फल देनी, युगल सरकार की झाँकी ॥

पद ६४

दीन दयाल दया करि के, इस दीनकी ओर निहारिये जू । बहु पाप की खानि प्रभू भीति मोहि जानि, कृपा की न बानि बिसा-

रिये जू। मद क्रोध अरु लोभ की सेन महा, हूँ अनाथ सहारे तिहारे ही जू। जानकि जीवन कीजे कृपा, तिहुँ लोक सुजश बिस्तारिये जू॥

पद ६५

पिया प्यारे की छवि पर मैं वारी।
श्याम सरोज बदन की शोभा, अलकै प्यारी घुंघरारी। कीट मुकुट मकरा कृत कुन्डल, नाशामणि की द्युति न्यारी॥ बिन देखे सखि कल न परत हैं, कोटि जतन कर मैं हारी। जानकि जीवन शरण लेहु अब, हरहु बियोग व्यथा सारी॥

पद ६६

हे रघुनन्दन कृपा अब कीजै।
योनि अनेकन भटक भटक कर, डूबत भवन निधि कर गहि लीजै। अति मलीन पापी अपराधी, निज दिसि देखि अभय मोहि

कीजै ॥ पतित उधारन नाम तिहारो, जानि पतित पावन कर दीजे। दीन दयाल प्रण जन पालक, करि दाया निज विरद रखीजे ॥ जानकि जीवन शरण तिहारो, द्वार पड़े चाहे जस कीजे।

पद ६७

सियवर की ये अनुपम झाँकी निरखो री सहेलियाँ। मन्द मन्द मुसक्यात मनोहर, दोउ मृद गात ललित अति सुन्दर। अवलोकहु भरि नयन युगल छबि, प्यारीरी मनहरियाँ ॥ कोटि मनोज लजावनि हारी, सुन्दरता अतिशय सुखकारी। दृग चकोर मुखचन्द्र सु लखि के, बार बार बलिहरियाँ। लाजत कोटि काम छबि ऊपर, दोउ दिसि अलिगन गावत मनहर ॥ बिबिध भाँति की सौंज लिये, कर सेवा की सुखकरियाँ। जानकि जीवन माधुरी मूरति, लखि के

भूल जात तन सूरति ॥ नभ प्रसूत बरषत सुर हरषत, बोलत ज़य जय कारियाँ ।

पद ६८

रघुनन्दन घनश्याम भजो रे मन ।

श्याम शरीर सुभाय सलोने, शोभा छवि के धाम ॥ भजो० वाम भाग शोभित सिय सुन्दर लखि रति मुलजानि । कीट चन्द्रिका मुकुट मनोहर, भूषण बसन महान ॥ अरस परस दोउ पान खवावत, मन्द मन्द मुसक्यान । दम्पति की शोभा अति प्यारी, घन दामिनि लपटान ॥ जानकि जीवन के यहि रस को, रसिक बिना को जान ।

पद ६९

युगल छवि बाँकी आज बनी ।

नील पीत पाथोज बर्ण बपु, सुन्दरता जू घनी ॥ हास बिलास प्रेम रस भीने, रसिकन के शिरमणी । मुकुट चन्द्रिका की छवि

अद्भुत भूषन जटित मणी ॥ जानकि जीवन रूप निरख के देवन जय जय धनीं ।

पद १००

सिया राम की अनुपम झाँकी, निरखत ही बन जाय रे । क्रीट मुकुट की चमकन दमकन, छबि अद्भुत दर्शाय रे ॥ उर मणिहार अनूपम शोभा, निरखि निरखि लोचन मन लोभा । प्रभु दर्शन की शोभा न्यारी री, बरनी कापै जाय रे ॥ क्रीट । नीरज नैन मनोहर चितवन, प्यारो प्यारी को तन हेरन । मन वानी बुद्धि से परे, दम्पति भाव लखायरे ॥क्रीट॥ कोटिन काम लजावन हारी, जोड़ी सुन्दर प्यारी प्यारी । जानकि जीवन दरस करतही, जन्म सुफल होय जायरे ॥ सिया राम ॥

पद १०१

किशोरी जी की छबि निरखत रघुनन्द ।

हिय बिच ध्यान धरत अवलोकत, पावत अति आनन्द। चन्द्र वदन सुकुमारि मनो हर द्युति दामिनि से दुचन्द ॥ ललित सकल अंग की छवि बरनै, चितवन मुसु-कन मंद। जानकि जीवन शरन सिया के निरखत युग पद कंज ॥

पद १०२

सँवलिया के नयना बड़े रतनार।
अति प्यारे अनियारे तीखे बेधत मनहु कटार ॥ चितवनि चारु जहर की बोरी, घायल करत अपार। जानकि जीवन लोचन निरखत होत तुरत भव पार ॥

पद १०३

किशोरी जी के लागत प्यारे नैन।
अरुनारे अनियारे चंचल, सुन्दरता के ऐन खंजन की उपमा क्या दीजे पंकज हूँ सम हैन। लखि लाजति कोटिन मृग नयनी

उपमा देत बनैन ॥ प्यारी प्यारी प्यारी अँखिया प्यारी प्यारी सैन। रघुनन्दन के बस करिबे को तिरछी तकनि सुख दैन ॥ कजरारे लोचन बिन देखे, पलक परत नहि चैन। जानकि जीवन शरन सिया के दरस करत दिन रैन ॥

पद १०४

बसो मेरे हिय में सिय रघुलाल।
कनक भवन में अनुपम झाँकी, सुन्दर रूप विशाल ॥ शील रूप आगार अमित छबि लखि लाजत रति मार। बाम भाग श्रीजनक किशोरी संतन की प्रति पाल ॥ सहज सलोनी सुठि सुकुमारी, दोउ दिसि अग-नित बाल। जानकि जीवन शरन सिया के सुख पावत तिहुँकाल ॥

पद १०५

लखो छबि प्यारी वारम्बार।

दामिनि बरन सिया सुकुमारी, श्याम बरन सरकार। हँसत हँसावत अरस परस दोऊ दिसि शोभा अमित अपार॥ बरसत फूल बिबुध हिय हरषत, करत सु जय जय कार। जानकि जीवन की यहि छबि पर लाजत कोटिन मार॥

पद १०६

भजोरे मन सिया रमन सुख धाम, सभी हो मन के पूरन काम। मनोहर सुन्दर है जोरी, सु चितवन चित को है चोरी, छबि रति मन्मथ मद मोरी, युगल बर दोऊ ललित ललाम॥ सभी॥ जनक जा सीता सीताराम, मैथिली जनक सुता शुभ नाम। जपो नित सिया सिया सियराम॥ सभी॥ कहो अवधेश, सुरेश, रमेश, रघुकुल भूषण श्री परमेश। सु व्यापक ब्रह्म बिरज बिश्वेश, जानकी जीवन जग अभिराम॥ सभी॥

पद १०७

किशोरी जी की, कृपा करत दुख दूर। मृदु मुस्कान मनोहर मूरति, अमिय सजीवन मूरि॥ किशोरी॥ चितवन ललित ताप त्रय मोचन, सुखदायक भरि पूरि ॥ कि ॥ दर्शन ध्यान करत अघनाशत, होत पाप सब चूर ॥ कि ॥ जानकि जीवन शरण सिया की भव बंधन दे तूरि ॥ किशोरी ॥

पद १०८

राघव निरखत नयन, किशोरी जी के। मुख मयंक बिन देखे पियको, पलक परत नहि चैन। आयसु काह कहो किन प्यारी, बदत सु मधुरे बैन॥ कृपा कटाक्ष बिलोकनि अद्भुत हृदय बसत दिन रैन। जानकि जीवन की सिय स्वामिनि, सन्तन की सुख दैन॥

साकेत गोरखपुर
16686

पद १०९

सिय सुकुमारी जनन सुख दैनी।

सुन्दरता सुख खानि मनोहर, मूरति मन हर लैनी॥ सकल पाप संताप दूरि करि, मन की आस पुरैनी। जानकि जीवन झाँकी लखि लखि गान करहि पिक बयनी॥

पद ११०

जानकि नाथ कृपा अब कीजै।

लख चौरासी योनि भरमि के आयो शरण बाँह गहि लीजै॥ भक्ति हीन आलसी, अलापक, हूं सब विधि अपराधी। मैं हूँ पतित पतित पावन तुम, अपनो बिरद रखीजै॥ दीन बन्धु सुख सिन्धु दयानिधि, जगत बिदित अघहारी। गणिका गीध अजामिल तारे, मेरी भी सुधि लीजै॥ चाहत निशि दिन तुमरे दर्शन इतना बिनय सुनीजै। जानकि जीवन अपनो करिके, सेवा में

रख लीजै ॥

पद

मन्द हँसनि अति प्यारी किशोरी जी की मुख सु-मयंक छवी अति नीकी, अधरन की अरुनारी । ललित कपोल छवी को बर्णों, नाशामणि अति न्यारी ॥ चमकनि दमकनि कान्ति दसन की अति अद्भुत सुखकारी । जानकि जीवन सिय मुख छवि पर कोटि रती बलिहारी ॥

पद

ललकि लखु प्यारी चारो ललना । दुइ श्यामल दुइ गौर मनोहर चितवन चित हरनां ॥ मुसुकन मन्द अमिय रस बोरी किलकन मन हरना। मात कौशिल्या लेत बलैया सु वारी वारी ना ॥ देत दान बिप्रन कहँ राजा बहु मुक्ता मणि ना । जाचकजन जाचक सोई पावत जो मन भावेना ॥ प्रमदा प्रमुदित गान करत बहु निरतत तत्थेई ना। जानकि, जीवन शरन दरस करि नयना भरेना ॥

पद

किशोरी जी की नयनन की बलिहारी। विकट भृकुटि सुन्दर चितवन पर, कोटि मदन रति वारी ॥ विधु बदनी सुकुमारि मनोहर रघुबर राज दुलारी। जाकी कृपा विलोकन चाहत निसि दिन अवध विहारी॥ सन्त जनन की इष्ट देवता सखियन प्राण पियारी। दर्शन दे दुख हरत जानकी जीवन की हित कारी॥

गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, पुराना भूड़ श्रीअयोध्याजी।